ओ३म्

।। इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागात्।।

गुरुकुल प्रभात आश्रम
एक परिचय

टीकरी, भोला झाल, मेरठ - २५०५०१ (उ.प्र.)
सम्पर्क : ०९७५८७४७९२०, ०९७१९३२५६७७
Email - gurukulprabhatashram@gmail.com Website - www.prabhatashram.in

अनुक्रम

विशिष्ट विभूतियों के विचारों में ... १

गुरुकुल प्रभात आश्रम ३

- अवस्थिति
- प्रवृत्तियाँ
- वाग्वर्धिनी परिषद्
- वेद एवं शास्त्र-कण्ठस्थीकरण
- उद्देश्य
- गुरुकुल की स्थापना
- हस्तलिखित पत्रिका 'अनन्त विजयम्'
- गोरक्षा-कृषि

व्यक्ति नहीं विश्वविद्यालय ६

- राष्ट्रीय योग्यता परीक्षा (नेट) एवं कनिष्ठ शोध अध्येता-वृत्ति (जे.आर.एफ)
- सेवा-नियोजन
- शोध संस्थान, शोध पत्रिका, बृहत् शोधपुस्तकालय का त्रिवेणी शोध-संगम
- खेल एवं खिलाड़ी

धर्मार्थ सेवा उपक्रम ८

- नैरोग्य आश्रम तथा मृत्युञ्जय लोक धर्मार्थ चिकित्सालय
- अखिल ब्रह्मण्ड-सेवा समिति-साधना से सेवा, सेवा से साधना
- आध्यात्मिक सत्संग-समिति
- प्राचीन भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार
- पर्यावरण-संरक्षण
- प्राणिमात्राधिकार संरक्षण

शाखा उपक्रम १०

- गुरुकुल नव प्रभात वैदिक विद्यापीठ
- गुरुकुल दयानन्द कल्याण आश्रम
- गुरुकुल विज्ञानाश्रम

परिशिष्ट - अनुक्रमणिकायें

- स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान द्वारा सम्पन्न वैदिक शोध-संगोष्ठियों का विवरण
- विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में सेवारत स्नातक
- माध्यमिक शिक्षक
- कनिष्ठ छात्रवृत्ति परीक्षा (जे.आर.एफ.) एवं अर्हता परीक्षा (नेट)
- स्नातकोत्तर परीक्षाओं में स्वर्णपदक प्राप्त
- विभिन्न विश्वविद्यालयों से सम्मानित शोधच्छात्र (पी.एच.डी.)
- विभिन्न विश्वविद्यालयों में शोधरत छात्र
- धर्माचार्य
- आर्ष संस्थाओं के आचार्य एवम् उपाचार्य
- विभिन्न संस्थाओं में पदाधिकारी खिलाड़ी

आश्रम में मनाये जाने वाले उत्सव एवं कार्यक्रम १७

आतिथ्य-व्यवस्था १७

समर्पण शोध संस्थान के कुछ मुख्य प्रकाशन १८

पञ्चगव्य से निर्मित आश्रम की 'सुधा' औषधियाँ १९

आश्रम की दिनचर्या २०

पाठ्यक्रम २१

प्रवेश-नियम २२

प्रवेश आवेदन प्रपत्र

विशिष्ट विभूतियों के विचारों में ...

卐 भारतीय-संस्कृति-सभ्यताया: वेदवेदाङ्गानाम् उन्नयने नूनम् आश्रमोऽयं भारत-भुवि सुप्रभातं वितनोति भविष्यति च वितनिष्यति।

- महामहोपाध्याय पं. युधिष्ठिर मीमांसक, सम्पादक- वेदवाणी

卐 गुरुकुल का व्यवस्थासहित दर्शन कर प्राचीन गुरुकुल पद्धति का एक उदाहरण प्रस्तुत हो जाता है।

- परमहंस स्वामी वामदेव जी महाराज, अध्यक्ष- श्री रामजन्मभूमि न्यास

卐 गुरुकुल प्रभात आश्रम में संस्कृत के पठन-पाठन की जिस प्रकार सुन्दर व्यवस्था की गई है, वह आज के युग में प्राचीन वैदिक वाङ्मय का एक ऐतिहासिक प्रतीक बन गई है। पूरे देश में यह अपने प्रकार का आदर्श गुरुकुल है। आर्यसमाज को इस पर गर्व है। यह गुरुकुल स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती की स्मृति में देश एवं विदेश के लिए योग्यतम वैदिक विद्वान् तैयार करने में अनवरत रूप में अग्रसर है।

- आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

卐 यहाँ का वैदुष्यपूर्ण वातावरण अन्य संस्थाओं के लिए भी अनुकरणीय है।

- शास्त्रार्थमहारथी पं. रुद्रदत्त शास्त्री

卐 आर्य संस्कृति एवं संस्कृत के प्रचार में यह संस्था अपने आपमें अद्भुत है।

- मूर्धन्य विद्वान् आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र (बदायूँ)

卐 प्रभात आश्रम का प्रकाश एक दिन विश्व को अवश्य आलोकित करेगा।

- प्रसिद्ध आर्यनेता व सांसद श्री प्रकाशवीर शास्त्री

卐 प्रभाताश्रम: एष: देशे एव अपूर्व: आदर्शभूत:। प्रत्येकं छात्रस्य मुखे तेज: अस्ति। भविष्यम् उज्ज्वलम् अस्ति।

- चमूकृष्ण शास्त्री, संस्कृत भारती

卐 गुरुकुल प्रभात आश्रम के दिग्दर्शन से प्रतीत होता है कि प्राचीन गुरुकुल परम्परा अभी समाप्त नहीं हुई है। प्राचीन काल के आदर्शों का आश्रम में मूर्तरूप देखकर कल्पना साकार हो उठती है। इस संस्था के विकास और विस्तार में ही समाज का सौभाग्य निहित है।

- श्री अशोक सिंघल, अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद्

卐 दर्शं दर्शं प्रसीदामि। ध्यायं ध्यायं प्रशंसामि। घनपादपसंकुले रमणीयारण्यपरिवृते आश्रमेऽस्मिन् गुरुकुलचर्या अनुघण्टानादं यथाक्रमं सम्प्रवर्तते। सर्वेऽपि छात्रा अनारतं निरन्तरं व्याकरणादिविषयं अधीयानाः ग्रन्थग्रन्थिं च समाधिजिगांसमानाः सन्दृश्यन्ते। पूज्यपादानां स्वामिमहाभागानां दर्शनं ममाहोभाग्यम्। सर्वदा सर्वथा अस्य समुन्नतिं कामयमानः विदुषां विधेयः

- आचार्यसुद्युम्नः

卐 यहाँ का वातावरण अनुशासन आदि देखकर मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है कि आज मैं किसी देवलोक में पहुँच गया हूँ। **- पद्मश्री क्षेमचन्द 'सुमन'**

卐 मेरी अकस्मात् परीक्षा में निरीक्षक के रूप में नियुक्ति की गयी। ऐसा प्रतीत होता था कि यदि आपके विद्यार्थियों के ऊपर कोई निरीक्षक न भी हो तो भी नकल नहीं करते। इसका परीक्षा भवन में बहुत सुन्दर वातावरण था, विद्यार्थियों की नैतिकता की पराकाष्ठा थी। विद्यार्थियों का अनुशासन तथा शान्त भाव देखकर मन प्रसन्न होता था।

- मा. कुन्दन सिंह आर्य, गुरुकुल झज्झर

(प्रस्तुत तथ्य म.दयानन्द वि.वि. के परीक्षा केन्द्र में आश्रम के छात्रों के व्यवहार एवं अनुशासन से अभिभूत होकर अनायास भेजे गये थे।)

卐 प्रभात आश्रम में अपने को पाकर मैं धन्य समझता हूँ।

- पद्मभूषण गुरु हनुमान्

卐 यहाँ की पवित्रता तथा कर्मठता वैदिक युग के आश्रमों का स्मरण कराती है।

- लाला रामगोपाल जी शालेवाल

卐 समाज में अन्धकार के निवारण हेतु आज प्रभात आश्रम जैसे अनेक ज्योतिपुञ्जों की आवश्यकता है।

- श्री दिनेश चन्द त्यागी, अध्यक्ष- अखिल भारतीय हिन्दू महासभा

卐 प्रभात आश्रम का चौमुखी विकास पू. स्वामी विवेकानन्द जी महाराज के यौगिक चमत्कारों का परिणाम ही कहा जा सकता है।

- पं. बाल दिवाकर हंस

卐 गुरुकुल प्रभात आश्रम को देखकर परम प्रसन्नता हुई। ब्रह्मचारियों में आप उच्च वैदिक संस्कृति के उन्नयन के जो भाव-भर रहे हैं, वह हम सब के लिए परम सौभाग्य की बात है। मैं इस संस्कृति की पावन मन्दाकिनी के उत्तरोत्तर उत्कर्ष का अभिलाषी हूँ।

- पद्मश्री क्षेमचन्द 'सुमन'

♦ ♦ ♦

ब्रह्मनिष्ठ पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती
के कृतित्व रूप में विद्यमान उनके व्यक्तित्व का परिचायक

गुरुकुल प्रभात आश्रम

अवस्थिति

दिल्ली हरिद्वार बाईपास मार्ग पर (दिल्ली की ओर से) बागपत मार्ग चौराहे से एक कि.मी. उत्तर तथा (हरिद्वार की तरफ से) बड़ौत मार्ग चौराहे से एक कि.मी. दक्षिण खड़ौली चौराहा है, जिससे ०८ कि.मी. पश्चिम भोला झाल नामक एक रमणीक स्थान है, जो अंग्रेजों के समय से ही विद्युत् निर्माण एवं मेरठ शहर के लिए शुद्ध जल-वितरण हेतु प्रसिद्ध है। यहाँ स्थित विद्युत् शक्तिगृह के अतिरिक्त जलनिकास हेतु बनी गंगनहर (स्केप) के पश्चिम किनारे-किनारे एक किलोमीटर दक्षिण दिशा में चलते जाने पर आप प्राचीन शिक्षापद्धति के निदर्शक गुरुकुल प्रभात आश्रम पहुँच जायेंगे।

यहाँ आने के लिए मेरठ गन्त्रीस्थान (भैंसाली स्थित रोडवेज) से हर घण्टे, आध घण्टे के अन्तराल से भोला (सतवाई या मढ़ी) आने वाली गन्त्री (बस) से सर्वप्रथम भोला की झाल आना होगा। यहां से प्रायः एक कि.मी. दूरी पर स्थित कुलभूमि पर आप पैदल अथवा सुविधानुसार उपलब्ध साधनों द्वारा आ सकते हैं अथवा बागपत मार्गस्थित जानी (नहर-पुल) से टीकरी ग्राम होते हुए भी आश्रम पहुंचा जा सकता है।

उद्देश्य

विश्वमानवता के उत्कर्ष हेतु भारतीय संस्कृति के पुनर्वैभव के अपने संकल्प की पूर्ति के लिए उपक्रमत्वेन-संस्थापित संस्था **'वर्णाश्रम संघ'** के एक केन्द्र के रूप में **'प्रभाताश्रम'** की स्थापना **पूज्य स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती जी** ने वर्तमान (वि.सं. २०७१) से ७५ वर्ष पूर्व की थी। उनका विचार था कि विभिन्न (पूँजी, साम्य, समाजादि) वादों में भ्रमित हो नाना प्रकार की समस्याओं से विषण्ण विश्वमानवता के उद्धार एवं उत्कर्ष हेतु सर्वप्रथम विश्ववारा भारतीय संस्कृति के प्रत्येक पक्ष को वर्तमान युग के परिप्रेक्ष्य में निखार कर तर्कयुक्त एवं बोधगम्य बना उसे पुनः जन-जन तक पहुंचाना होगा। इसी से सम्पूर्ण विश्व सभी समस्याओं से मुक्त होकर चिरप्रतीक्षित अपने लक्ष्य शान्ति एवं सौख्य को प्राप्त करेगा। क्योंकि अब यही केवल एक मात्र स्रोत बचा है, जहाँ से विश्व भर के बुद्धिजीवियों को आशा की किरण आती दृष्टिगोचर हो रही है। (जैसा कि धीरे-धीरे इस तरफ और अधिक आकृष्ट होते चले आने की उनकी गतिविधियां संकेत दे रही हैं) इन्हीं सब तथ्यों को दृष्टिगत करते हुए मानवधर्म एवं मानवसंस्कृति का नव अभ्युदय- नव प्रभात लाने के महान् उद्देश्य की पूर्ति हेतु ही आपकी इस प्रिय संस्था प्रभाताश्रम की उनके द्वारा स्थापना की गई थी।

प्रवृत्तियाँ

उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु श्रद्धेय श्री स्वामी जी महाराज के उत्तराधिकारी शिष्य (वर्णाश्रम संघ के सर्वाधिकारी प्रधान) वेद, व्याकरण एवं ब्राह्मण ग्रन्थों के मर्मज्ञ, तपोनिष्ठ पूज्य श्री स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती के आचार्यत्व में प्राचीन भारतीय (गुरुकुल) शिक्षापद्धति के माध्यम से एक शिक्षण केन्द्र का संचालन विगत ४२ वर्षों से प्रभाताश्रम में हो रहा है, जिससे मानवीयता की प्रसारिका भारतीय संस्कृति का बाल्यकाल से ही विद्यार्थी के जीवन में समावेश हो सके। **'शैक्षिक वातावरण में समान आहार, विहार एवं व्यवहार के साथ प्रत्येक को उसकी योग्यतानुसार उचित शिक्षा'** भारतीय संस्कृति के इस क्रान्तिकारी सिद्धान्त को क्रियात्मक रूप से आचरण में लाने के लिए आवश्यक कटिबद्धता के साथ-साथ अपने आश्रमीय दैनिक व्यवहार माध्यम में संस्कृत-भाषा के नियमित अभ्यास से उसको पुनः 'लोकभाषा' की विलुप्त प्रतिष्ठा देने के स्वप्न को साकार करने के अपने प्रयासों के कारण यह निःशुल्क शिक्षा संस्थान जहाँ राष्ट्रभक्तों, सिद्धान्तवादियों एवं संस्कृतप्रेमियों के आकर्षण एवं उत्सुकता का विषय रहा है, वहीं योग्यतात्मक अध्ययन-अध्यापन एवं शिक्षण के क्षेत्र में भी इस गुरुकुल महाविद्यालय ने अपनी अंकुरावस्था की इस स्वल्पावधि में प्राप्त अभूतपूर्व सफलता के कारण पर्याप्त ख्याति अर्जित की है।

गुरुकुल की स्थापना

आश्रम में गुरुकुल रूप विद्यालय का विधिवत् शुभारम्भ हुआ सन् १९७२ में; जब उड़ीसा प्रान्त से ही प्रायः ३० छात्रों का अध्ययन हेतु एक साथ प्रवेश होता है। तब अध्ययन की सुचारु अथवा कह सकते हैं उत्कृष्ट परिणाम देने वाली व्यवस्था के पश्चात् भी चूँकि निवास, आच्छादन, भोजन आदि की दृष्टि से अभी अपेक्षित अनुकूलता नहीं आ पायी थी; अतः प्रदेश अथवा मण्डलीय अभिभावकों की अपने बालकों के गुरुकुल में प्रवेश के प्रति वैसी अभिरुचि का न पाया जाना स्वाभाविक ही था, जैसा कि अब दृष्टिगोचर होता है। अब तो पाँच बालकों के स्थानों की पूर्ति हेतु ही ४५० से ५०० अभिभावक अपने बालकों को प्रवेश-परीक्षा दिलाने में समुत्सुक दिखाई देते हैं। कारण स्पष्ट है-

शनैः शनैः गुरुवर्य पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी की तपस्या रंग लाने लगी। जहाँ पहले झाड़-झंकार, भैसों के लोटने से बढ़ते बरसाती गड्ढों का साम्राज्य था। आज वहाँ सुन्दर सलीके वृक्ष, करीने से सजायी फुलवारी हठात् आगन्तुकों का मन मोहने लगी है। चूँकि खेत हैं, केवल इसीलिये विवशतापूर्वक आने वाले किसान भी जहाँ आने में पहले भयग्रस्त होते थे, वहीं आश्रम की अवस्थिति के फलस्वरूप बढ़ा आज जन एवं वाहन-संचार कभी-कभी खुद आश्रमवासियों को ही उद्विग्न करने लगता है। झोपड़ियों के स्थान पर बने भव्य भवन प्रसिद्ध ग्रन्थ कादम्बरी के गुरुकुल-वर्णन की याद दिलाने लगे हैं। गुरुकुल की स्थापना से अब तक सब कुछ बदलता चला गया, यदि केवल कुछ नहीं बदला है तो वह है- एक तो कड़ा अनुशासन, दूसरा छात्रों द्वारा दैनिक व्यवहार में संस्कृत भाषा के प्रयोग का अनिवार्य नियम, जिसमें इतना संशोधन और हो गया कि यदि किसी अभ्यागत अतिथि को भी पूज्य स्वामी जी महाराज से हिन्दी में वार्तालाप करना है तो उसे इसकी सुविधा आश्रम परिसर से बाहर बोध-वट के नीचे ही उपलब्ध होगी। दिनचर्या में भी इतना परिवर्तन अवश्य हुआ कि जहाँ पहले पूज्य स्वामी जी ही केवल अपनी ही ध्यान-साधना का अभ्यास करते रहते थे, वहीं सन् १९७९ से समस्त कुलवासियों को भी ध्यान-साधना प्रशिक्षणार्थ एक कक्षा लेने

लगे। किन्तु जैसे गुरुकुल के प्रारम्भ में मेधावी ज्येष्ठ छात्र कनिष्ठ श्रेणियों का अध्यापन करते थे, वह परम्परा आज भी उसी रूप में प्रवर्त्तमान है।

'वाग्वर्धिनी परिषद्' एवं हस्तलिखित पत्रिका 'अनन्तविजयम्'

अन्तेवासियों में व्यक्तित्व के विकास, भाषण एवं लेखन कला के संवर्धन हेतु 'वाग्वर्धिनी परिषद्' की प्रवर्त्तना की गयी, जिसके अन्तर्गत एक हस्तलिखित त्रैमासिक पत्रिका 'अनन्तविजयम्' का प्रकाशन होता है, जिसमें प्रत्येक कुलवासी के द्वारा निश्चित विषयों पर अपने लेख, निबन्ध, कविता, कहानी, श्लोक अथवा यथारुचि गद्यात्मक या पद्यात्मक लेखन प्रस्तुत करना अनिवार्य है, वहीं प्रत्येक साप्ताहिक अथवा पाक्षिक अवसर पर निश्चित विषय एवं समय-सीमा के अन्तर्गत अपनी वाचिक अभिव्यक्ति की प्रस्तुति करनी होती है, जिसका प्रभाव है कि दिल्ली वि.वि. की सद्यः वाक्प्रतिस्पर्धा हो या उज्जैन के कालिदास समारोह की वाद-विवाद प्रतियोगिता या कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, पंजाब विश्वविद्यालय, (चण्डीगढ़) की भाषण, श्लोक समस्यापूर्ति एवं सद्यो लघुप्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता अथवा इन जैसी अन्य अनेक प्रतिस्पर्धाओं के चल वैजयन्ती एवं अन्य पुरस्कारों पर गुरुकुल के छात्रों का एकाधिकार रहा है।

वेद एवं शास्त्र-कण्ठस्थीकरण

गुरुकुल के विद्यार्थियों ने जहाँ सूत्र, मन्त्र व श्लोकों की अन्त्याक्षरी एवं श्लोक, संस्कृत गीतगायन में सदैव चुनौती बनाये रखी, वहीं अनेकानेक विद्यार्थी यजुर्वेदस्मरण तथा बहुशः विद्यार्थी सामवेद कण्ठस्थीकरण का सफल प्रदर्शन कर अनेक शताब्दी समारोहों व वेद सम्मेलनों में गौरव पाकर सम्मानित हो चुके हैं। शास्त्रस्मरण की दृष्टि से अष्टाध्यायी, धातुपाठ, उणादिकोष, लिङ्गानुशासन, वर्णोच्चारणशिक्षा, नीतिशतक, चाणक्यनीति प्रत्येक अन्तेवासी के लिए अनिवार्य है। वरिष्ठ विद्यार्थियों में योगदर्शनसहित षड्दर्शनस्मरण करने की परम्परा है।

गोरक्षा-कृषि

आश्रम में १६ एकड़ भूमि तथा एक हलयन्त्र (ट्रैक्टर) है, जिसके माध्यम से गुरुकुलवासी यथासंभव स्वयं ही कृषि उत्पादन लेते रहते हैं, जिसका उपयोग आश्रमवासियों के भोजन एवं गौओं के चारे हेतु हो जाता है। गोशाला में प्रायः ४० गौएं (बछड़े, बछड़ियों सहित) रहती हैं, जिनसे सभी कुलवासियों एवं अभ्यागत अतिथियों को शुद्ध दूध की प्रातः एवं रात्रि भोजनोपरान्त सेवा सर्वथा निःशुल्क उपलब्ध करायी जाती है। मध्याह्न भोजन में घी एवं सम्भव होने पर मट्ठे का वितरण भी सभी कुलवासी छात्रों को बिना किसी शुल्क के नियमित किया जाता है।

♦ ♦ ♦

व्यक्ति नहीं विश्वविद्यालय

सन्तशिरोमणि पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती के कृतित्व रूप में विद्यमान उनके व्यक्तित्व का परिचायक गुरुकुल प्रभात आश्रम नाम से भले ही विश्वविद्यालय न हो; किन्तु वामन-स्वरूप नि:शुल्क इस महाविद्यालय की कार्यपरिणति अनेक प्रतिष्ठित विराट् विश्वविद्यालयों से भी अधिक प्रतीत होती है :-

♦ राष्ट्रीय योग्यता परीक्षा (नेट) एवं कनिष्ठ शोध अध्येता-वृत्ति (जे.आर.एफ)

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा कनिष्ठ शोध अध्येता वृत्ति (जे.आर.एफ.) हेतु आयोजित राष्ट्रीय योग्यता परीक्षा (नेट), जिसमें उत्तीर्ण होने पर प्राय: २४००० रुपये मासिक शोधवृत्ति के रूप में विश्वविद्यालयों के माध्यम से अनुसंधान हेतु प्रदान किये जाते हैं तथा विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों में प्रवक्ता-पद हेतु यही अर्हता का मानक भी है। गुरुकुल के प्राय: ४२ स्नातक इस परीक्षा में उत्तीर्ण हो चुके हैं।

♦ सेवा-नियोजन

गुरुकुल प्रभात आश्रम के बहुश: सेवाव्रती स्नातक जहाँ अनेकानेक धर्मार्थ संस्थानों का सञ्चालन कर रहे हैं, वहीं अनेक स्नातक धर्माचार्य के पदों पर विराजित होकर समाज में धर्मजागरण कर संस्कृति-संरक्षण में संलग्न है। इसके अतिरिक्त गुरुकुल के अधिसंख्य स्नातक शिक्षाक्षेत्र में विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों एवं उत्तरमाध्यमिक विद्यालयों में प्रोफेसर, प्रवाचक व प्रवक्ता पदों पर कार्यरत हैं।

♦ शोध संस्थान, शोध पत्रिका, बृहत् शोधपुस्तकालय का त्रिवेणी शोध-संगम

पूज्य स्वामी समर्पणानन्द जी का आश्रम की स्थापना का मुख्य उद्देश्य वैदिक ज्ञान-विज्ञान का अनुसन्धान था। इसके लिए अग्रलिखित आठ लोकों के बहु आयामी विस्तार की योजना बनाई गई थी। वे आठ लोक इस प्रकार है :-

१. अग्निलोक	-	वैदिक अनुसन्धान
२. अदितिलोक	-	भौतिक विज्ञान विभाग
३. सोमलोक	-	ललित कला विभाग
४. मृत्युञ्जयलोक	-	आयुर्वेद विभाग
५. वरुणलोक	-	मनोविज्ञान अथवा जीव-विज्ञान विभाग
६. गोलोक	-	कृषि तथा गोपालन विभाग
७. इन्द्रलोक	-	राजनीति विभाग
८. ब्रह्मलोक	-	अध्यात्मविद्या विभाग

अनुसन्धान के उद्देश्य हेतु स्थापित श्रद्धेय स्वामी समर्पणानन्द जी का निजी पुस्तकालय आज अपने बृहद् आकार में संस्कृत विशेषत: वैदिक वाङ्मय के शोधार्थियों का आकर्षण का केन्द्र बनता जा रहा है। वैदिक अनुसन्धान के संवर्धन हेतु सन् १९८५ में **'स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान'** की स्थापना की गयी, जिसके तत्त्वावधान में वर्ष में दो बार, एक- प्रात: स्मरणीय स्वामी समर्पणानन्द जी महाराज के पुण्यदिवस **मकर संक्रान्ति** के पावन पर्व पर पर तथा द्वितीय- उन्हीं के जन्मदिवस **श्रावण शुक्ल एकादशी** को विभिन्न विश्वविद्यालयों के अनेक वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में विद्वत्-शोध-संगोष्ठियों का आयोजन किया जाता रहा है। इस प्रकार अब तक विभिन्न विषयों पर ५६ संगोष्ठियों का आयोजन हो चुका है। गोष्ठियों में पठित शोध सामग्री एवं अन्य उपयोगी तथ्यों के प्रकाशन हेतु सन् १९८६ से एक अन्तर्राष्ट्रीय मानक (ISSN २२२९-६३२८) की **त्रैमासिकी शोध पत्रिका 'पावमानी'** का प्रकाशन भी संस्थान के अन्तर्गत नियमित चल रहा है।

♦ खेल एवं खिलाड़ी

गुरुकुल की स्थापना के समय से ही यह भावना तो अवश्य रही कि कुलवासी छात्र जिस क्षेत्र में उतरें हमेशा वहाँ अग्रणी ही सिद्ध हों, तथा राष्ट्रीयता की भावना के चलते (भारत में खेल एवं खिलाड़ियों की यह दुर्दशा कि सन् १९९२ के वार्सिलोना ओलम्पिक में ८५ करोड़ भारतीयों के प्रतिनिधिभूत ८५ खिलाड़ियों में से एक भी कोई पदक नहीं ला पाया) गुरुकुल में तीरन्दाजी प्रशिक्षण के प्रयास सन् १९९३ में प्रारम्भ किये गये और राष्ट्रीय खेलों (१९९७) के तीरन्दाजी के दोनों स्वर्ण पदक (व्यक्तिगत एवं दलीय) गुरुकुल के विद्यार्थियों के कब्जे में आ गये। अब यह सर्वविदित है कि तीरन्दाजी के क्षेत्र में गुरुकुल के खिलाड़ी छात्र राष्ट्रीय स्तर पर वर्चस्व स्थापित करने के पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों के लिये चुनौती बनते जा रहे हैं। इस तथ्य का निदर्शन हमें भारतीय मीडिया का यह अनुमान कराता है कि ओलम्पिक खेलों का पहला भारतीय स्वर्ण तीरन्दाजी में प्रभाताश्रम के किसी छात्र द्वारा ही लाया जायेगा। ओलम्पिक प्रतिभागिता के अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के अनेकानेक स्वर्णपदकों के साथ भारत के ओलम्पिक माने जाने वाले राष्ट्रीय खेल (१९९७) के तीरन्दाजी के व्यक्तिगत एवं दलीय दोनों स्वर्ण पदकों के अतिरिक्त अनेक चैम्पियनशिपों एवं अखिल भारतीय प्रतिस्पर्धाओं के १५० से अधिक स्वर्णपदक (हम रजत और कांस्य की गणना नहीं कर रहे हैं) गुरुकुल के खिलाड़ी छात्र अब तक पिछले सालों में अर्जित कर चुके हैं। इसमें भी गुरुकुल के छात्र 'पूत के पांव पालने में दीखने लगते हैं' कहावत चरितार्थ करते हुए प्रारम्भिक अवस्था में ही अच्छे परिणाम प्राप्त करने लगे हैं। कोई संशय नहीं कि यदि प्रायोजक आगे आयें तो गुरुकुल के उर्वरा वातावरण में कुलवासी छात्रों के मस्तिष्क में डाला गया किसी भी क्षेत्र- खेल या कम्प्यूटर विज्ञान का बीज अपनी सम्पूर्ण परिणामिता को प्राप्त कर सकेगा।

♦ ♦ ♦

धर्मार्थ सेवा उपक्रम

♦ नैरोग्य आश्रम तथा मृत्युञ्जय लोक धर्मार्थ चिकित्सालय

प्रचलित पाश्चात्य चिकित्सा पद्धतियों की विसङ्गतियों से त्रस्त भारतीय जनता को राहत पहुँचाने हेतु संस्था के चिकित्सकीय (आयुर्विज्ञान) विभाग- नैरोग्याश्रम द्वारा विभिन्न जड़ी-बूटियों से आयुर्वेदिक औषधियों का निर्माण भी किया जा रहा है, जिनमें स्फूर्ति एवं ताजगी हेतु सेवनीय अमृत पेय **प्रभात सुधा** के द्वारा जहाँ सर्दी, जुकाम, थकान, बुखार, सिरदर्द, कब्ज आदि विभिन्न रोगों में विशेष लाभ प्रयोगकर्त्ताओं को दृष्टिगोचर हुआ है, वहीं मोतियाबिन्द के नाश हेतु निर्मित **नेत्र सुधा** रामबाण औषधि का प्रचार भी ग्रामीण जनता में विशेष रूप से बढ़ रहा है, क्योंकि देखने में आया है कि इस औषधि से मोतियाबिन्द में ही नहीं, अपितु आंख से पानी निकलने, नजर गिरने, आँख की लाली, जलन, फुल्ली, दुखनी आदि रोगों में भी शीघ्र लाभ प्राप्त होने लगता है। इसी तरह दाँत एवं मसूड़ा सम्बन्धी रोगों में पूर्ण प्रभावकारी **दन्त सुधा**, बाल झड़ना, बाल पकना आदि केशविकारों में लाभकारी **केश सुधा**, त्वचारोगों में लाभप्रद, ताजगी एवं प्रसन्नताप्रद साबुन **सौन्दर्य सुधा**, मोटापा, यकृत् रोग, त्वचारोग आदि रोगों में लाभकारी **मेदोहर अर्क सुधा**, मूत्रसम्बन्धी विकार एवं पीलिया आदि में लाभकारी **गोमूत्र अर्क सुधा**, खुजली, दाद आदि त्वचा सम्बन्धी रोगों में लाभकारी **चर्म सुधा,** महिलाओं के आन्तरिक समस्त रोगों में पूर्ण लाभप्रद **नारी सुधा**, असमय बाल झड़ना व सफेद होना, रूसी आदि केशविकारों लाभकारी तथा अनिद्रा रोग को दूर पूर्ण निद्रा में सहायक **केश सुधा 'तेल',** पुरुषों के धातुविकार, स्वप्नदोष आदि क्षय रोगों को दूर कर बल-वीर्य की वृद्धि में अत्यन्त लाभदायक **पौरुष शक्ति सुधा,** शरीर की ग्रन्थियों की पीड़ा व सूजन, नसों की दुर्बलता आदि अस्थिसम्बन्धी विकारों में सुखकारी तथा शरीर की मालिश हेतु **घर्षण सुधा** एवं सुस्वास्थ्य के साथ मनोहारिणी गृहसुगन्धि के लिए **गन्ध सुधा,** इत्यादि पञ्चगव्य से निर्मित अनेक 'सुधा' औषधियाँ पञ्चगव्य महाशक्ति के रूप में आपके लिए उपलब्ध हैं।

ग्रामीण जनता की चिकित्सा-सुविधा हेतु औषधि-वितरणार्थ एक धर्मार्थ होम्यो चिकित्सालय **'मृत्युञ्जय लोक'** के नाम से संस्था द्वारा सञ्चालित है।

♦ अखिल ब्रह्माण्ड-सेवा समिति-साधना से सेवा, सेवा से साधना

ध्यान साधना के माध्यम से सतो-गुण की अधिकता उत्पन्न कर प्राणिमात्र के सर्वाङ्गीण विकास में योगदान करना सेवा का एक रूप है तथा जन-जन की निष्काम भावना से सेवा करना साधना का दूसरा रूप है। गुरुकुल के संस्थापक व संचालक पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी के विचार में सेवा तथा साधना एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। एक के बिना दूसरा अधूरा या कहना चाहिए बिल्कुल असंभव है।

अत: साधना की भावना से ही जहाँ इस गुरुकुल का सर्वथा नि:शुल्क संचालन उनके द्वारा किया जा रहा है, वहीं उड़ीसा के वनवासी क्षेत्रों में समय-समय पर विशाल महायज्ञों का आयोजन पू. स्वामी जी महाराज अपने विद्यार्थियों के साथ करते रहे हैं। राजबुड़ासम्बर, जिला सम्बलपुर में जनवरी सन् १९७७ में एवं फरवरी सन् १९८९ तथा फूलवानी में मार्च सन् १९९२ में जोखीपाली में दिसम्बर २००४ में आयोजित विशालकाय विश्वकल्याण महायज्ञ तथा नवप्रभात आश्रम, नूआँपाली में दिसम्बर २०१० में

आयोजित चतुर्वेद पारायण महायज्ञ इसके अन्यतम उदाहरण हैं; भव्य समारोहपूर्वक आयोजित इन 'संस्कृति प्रचार-प्रसार शिविरों', का स्थानीय जनता पर स्थायी प्रभाव देखने में आया। विधर्मियों के षड्यन्त्रों से संत्रस्त अभाव-पीड़ित इस क्षेत्र में तीनों ही अवसरों पर लगातार चले विश्वभृत् भण्डारों तथा वस्त्र एवं पात्र वितरण कार्यक्रम, जिनसे हजारों आवश्यकतावान् लोग लाभान्वित हुए, विशेष आकर्षण एवं चर्चा के विषय रहे। सन् १९९७ में पू. स्वामी जी की प्रेरणा एवं निर्देश पर गुरुकुल कांगड़ी वि.वि. के संस्कृत विभाग के प्रवाचक पद पर कार्यरत गुरुकुल के वरिष्ठ स्नातक डॉ. सोमदेव शतांशु के प्रयासों से पश्चिमी उड़ीसा के अकाल ग्रस्त भूखमरी पीड़ित क्षेत्रों में गुरुकुल के तत्त्वावधान में अनेकों सहायता केन्द्रों का (एक से तीन महीने तक) संचालन किया गया, जिनके माध्यम से प्रायः शताधिक ग्रामों के सहस्राधिक पीड़ितों ने भोजन एवं अन्य जीवन साधन प्राप्त किये।

♦ आध्यात्मिक सत्संग-समिति

समीपवर्ती क्षेत्रवासियों की बौद्धिक एवं आत्मिक उन्नति हेतु गुरुकुल में प्रति माह के द्वितीय रविवार को अपराह्न २ से ५ बजे तक नियमित सत्संग का आयोजन पूज्यपाद स्वामी विवेकानन्द जी महाराज के सान्निध्य में होता है। इसमें वैदिक यज्ञों के प्रशिक्षण के साथ ध्यानसाधना का अभ्यास कराया जाता है।

♦ प्राचीन भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार

वर्त्तमान युग के जनजीवन को ध्यान में रखते हुए तथा सामान्य शिक्षित एवं अशिक्षित जनता के हित को भी देखते हुए आश्रम के कुलवासी सदस्य समय-समय विभिन्न ग्रामों एवं नगरों में 'संस्कृति प्रचार प्रसार कार्यक्रम' (यज्ञ प्रवचनादि कार्यक्रम) के आयोजनों द्वारा चरित्र-निर्माण का प्रयास करते रहते हैं। इसके साथ ही हरिद्वार, गढ़मुक्तेश्वर आदि तीर्थस्थानों पर कुम्भ, कार्तिक पूर्णिमादि विभिन्न अवसरों पर आयोजित होने वाले मेलों में आर्यसमाज के पण्डाल से प्राचीन भारतीय वैदिक संस्कृति एवं सभ्यता के प्रचार-प्रसार में गुरुकुल अपना योगदान देता रहा है।

♦ पर्यावरण-संरक्षण

गुरुकुल के विद्यार्थी जहाँ वर्ष में पर्याप्त वृक्षारोपण कर पर्यावरण संतुलन हेतु प्रयासरत रहते हैं, वहीं प्रातः-सायं नियमित अग्निहोत्र यज्ञ के माध्यम से वातावरण शुद्धि करते रहते हैं।

♦ प्राणिमात्राधिकार संरक्षण

मानव ही नहीं, अपितु समस्त प्राणियों को सुखपूर्वक जीने का सम्पूर्ण अधिकार है, इस भावना के वशीभूत गुरुकुलवासी वधशालाओं के विरुद्ध संचालित आन्दोलनों में सक्रिय भाग ग्रहण करते रहते हैं।

♦ निष्कर्षतः

यदि आप पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज की साधना-स्थली कर्मक्षेत्र गुरुकुल प्रभात आश्रम का स्वयं दिग्दर्शन करने पहुचेंगे तो आप पायेंगे कि शब्दों की वर्णना के सामर्थ्य से कहीं अधिक आकर्षक एवं अनुशासित वातावरण आपको अन्दर तक छू जाता है और आप सोचने लगते हैं कि बाहर के कोलाहल एवं तनावपूर्ण वातावरण से परेशान सारे संसार की शान्ति और रमणीयता ने कहीं यहीं तो बसेरा नहीं लगा लिया है?

शाखा-उपक्रम

गुरुकुल नव प्रभात वैदिक विद्यापीठ

''नव प्रभात गुरुकुल में आकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। इस वनवासी क्षेत्र में यह नव प्रभात गुरुकुल निश्चित रूप से वैदिक धर्म के नव प्रभात को लाने वाला होगा, ऐसा मुझे दृढ विश्वास है।''

-डा. प्रवीण भाई तोगड़िया, महामन्त्री, विश्व हिन्दू परिषद्

श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ, आचार्य पूज्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी के अधिष्ठातृत्व में १४ वर्ष पूर्व सन् २००० में स्थापित गुरुकुल नव प्रभात वैदिक विद्यापीठ, नूआँपाली, कनसिंहा, बरगढ़ (ओड़िशा) के अनग्रसर प्रान्त में संस्कृत और संस्कृति के संरक्षण दिशा में उल्लेखनीय अवदान के साथ शिक्षा, सेवा, समृद्धि तथा वैदिक ज्ञान, विज्ञान प्रचार-प्रसार करने का मुख्य केन्द्र बना हुआ है। न्यास के माध्यम से अनेक प्रकल्प सर्वजनहिताय की भावना के साथ कार्यान्वित हो रहे हैं।

१. इस गुरुकुल में भी योग्य आचार्यों द्वारा ब्रह्मचारी अन्तेवासियों को भोजन, वस्त्र, आवास आदि के साथ नि:शुल्क शिक्षा प्राप्त करायी जाती है। वेद-वेदाङ्गों सहित आधुनिक विषयों का अध्ययन-अध्यापन का भी सुप्रबन्ध किया हुआ है। गुरुकुल केवल गुरुकुल में ही सीमित न रहकर विश्वविद्यालय का स्वरूप बने, न्यास का यह प्रशंसनीय प्रयास जारी है।

२. न्यास के कार्यक्षेत्र में कन्याओं की शिक्षा की अत्यन्त दुरवस्था एवं अभाव को दृष्टि में रखकर न्यास की ओर से नव प्रभात कन्या गुरुकुल का शिलान्यास दि. ०१.०१.२०११ में किया गया है, जिसका निर्माण कार्य चल रहा है।

३. इस क्षेत्र में स्वास्थ्य व्यवस्था बहुत ही विपर्यस्त तथा अवहेलित है। अत: जनता जनार्दन तक नि:स्वार्थ तथा उन्नत मान की सेवा प्राप्त कराने हेतु न्यास एक आयुर्वेदिक चिकित्सालय का शुभारम्भ किया है। स्थानीय पर्वतीय जड़ी-बूटी का सदुपयोग करने के लिए एक फार्मेसी तथा अनुसन्धान केन्द्र उद्घाटन करना न्यास के योजनान्तर्गत है।

४. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गोवंश का जैसा ह्रास हो रहा है; भारत जैसे कृषि प्रधान देश के लिए यह शुभंकर प्रतीत नहीं होता है। अत: गोवंश के संरक्षण और संवर्द्धन हेतु न्यास द्वारा एक आदर्श गोशाला परिचालित हो रही है।

५. वर्तमान समय में गुरुकुल प्रभात आश्रम के सुयोग्य स्नातक **आचार्य बृहस्पति जी** के आचार्यत्व में यहाँ का अध्ययन-अध्यापन का कार्य सुचारु रूप से चल रहा है तथा आश्रम के प्रबन्धन का कार्य भी **आचार्य भगवान् देव जी** के निरीक्षण में हो रहा है।

गुरुकुल दयानन्द कल्याण आश्रम

गुरुकुल दयानन्द कल्याण आश्रम, जिला केन्द्रापाड़ा, ओड़िशा में २००१ में स्थापित हुआ था। इस गुरुकुल में जहाँ ब्रह्मचारियों की पढ़ने-पढ़ाने की व्यवस्था है, वहीं प्रति रविवार गिरिवासी- वनवासियों के मध्य आध्यात्मिक भावना के उत्थान हेतु आश्रमवासी योग एवं यज्ञ शिविरों का आयोजन करते हैं। महिलाओं के स्वरोजगार स्वावलम्बन की दृष्टि से एक सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र का सञ्चालन भी इस गुरुकुल के द्वारा किया जाता है। इस गुरुकुल के मन्त्री गुरुकुल प्रभात आश्रम के सुयोग्य स्नातक **श्री सुदर्शन शास्त्री** हैं। पूज्यपाद स्वामी जी की प्रेरणा से इनके द्वारा सञ्चालित इस आश्रम की मुख्य विशेषता विपन्नावस्था के समय दुर्भिक्ष, बाढ़ आदि में अन्नदान, वस्त्रदान, चिकित्सा सुविधाओं द्वारा असहाय ग्रामवासियों को सहयोग उपलब्ध कराना है।

गुरुकुल विज्ञानाश्रम

गुरुकुल विज्ञानाश्रम, जिला- पाली, राजस्थान में सन् १९९५ में स्थापित हुआ। गुरुकुल प्रभात आश्रम के सुयोग्य स्नातकों के संरक्षण में ब्रह्मचारियों का अध्ययन, अध्यापन यहाँ विधिवत् सुचारु रूप से अग्रेसर है। इस संस्था के माध्यम से उस क्षेत्र के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक उत्थान के लिए भी यथासम्भव प्रयास किया जा रहा है।

♦ ♦ ♦

स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान द्वारा सम्पन्न
वैदिक शोध-संगोष्ठियों का विवरण

१.	२४ नवम्बर १९९५	वैदिक देवतावाद।
२.	१३ सितम्बर १९८६	वैदिक सृष्टि उत्पत्ति प्रक्रिया।
३.	१ अगस्त १९८६	श्रौतयागों की लक्ष्यगामिता।
४.	१३ जनवरी ९९८७	औपनिषदी संस्कृति।
५.	२२ अगस्त १९८७	वैदिक संहिताओं में नैतिक तत्त्व।
६.	१३ जनवरी १९८८	वैदिक स्त्री ऋषि।
७.	१ अक्टूबर १९८८	वैदिक संहिताओं में लोकों की परिकल्पना।
८.	१३ जनवरी १९८९	ऋग्वेद में पारिवारिक स्वरूप।
९.	१ अगस्त १९८९	ब्राह्मण ग्रन्थों में प्रतीक।
१०.	१३ जनवरी १९९०	आधुनिक पर्यावरण समस्या एवं वैदिक समाधान।
११.	१ अगस्त १९९०	वैदिक उषा का स्वरूप।
१२.	१३ जनवरी १९९१	वैदिक शासन व्यवस्था।
१३.	१ अगस्त १९९१	वैदिक अर्थव्यवस्था वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में।
१४.	१३ जनवरी ११९२	वैदिक अर्थव्यवस्था वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में।
१५.	१३ जनवरी १९९३	वैदिक संहिताओं में अस्त्र-शस्त्र विज्ञान।
१६.	१ अगस्त १९९३	वैदिक कृषि आधुनिक परिप्रेक्ष्य में।
१७.	१३ जनवरी १९९४	वैदिक संहिताओं में राष्ट्रीय तत्त्व।
१८.	१७ अगस्त १९९४	वैदिक संहिताओं में गौ।
१९.	९ मार्च १९९५	वैदिक वाङ्मय में विविध विज्ञान।
२०.	७ अगस्त १९९५	वैदिक वाङ्मय में ललित कलाएं।
२१.	१३ जनवरी १९९६	वैदिक वाङ्मय में शिक्षा एवं प्रशिक्षण विधि।
२२.	२५ अगस्त १९९६	वेदों में युग्म देवता।
२३.	१३ जनवरी १९९७	वेदों में वन्य जीवन।
२४.	१४ अगस्त १९९७	वैदिक संहिताओं एवं ब्राह्मण ग्रन्थों में निर्वचन प्रकार।
२५.	१३ जनवरी १९९८	वेदों में वसु देवता।
२६.	४ अगस्त १९९८	वेदों में सामाजिक व्यवस्था की परिकल्पना।
२७.	१३ जनवरी १९९९	वैदिक संहिताओं में नारी।
२८.	२२ अगस्त १९९९	वैदिक वाङ्मय में आख्यानों का स्वरूप।
२९.	१३ जनवरी २०००	वैदिक संहिताओं में मृत्यु का स्वरूप।

३०.	१० अगस्त २०००	**वेदार्थ प्रक्रिया में ज्योतिष।**
३१.	१३ जनवरी २००१	**वेदार्थ प्रक्रिया में शिक्षा वेदांग।**
३२.	३१ जुलाई २००१	**वेदार्थ प्रक्रिया में कल्प सूत्र।**
३३.	१३ जनवरी २००२	**वेदार्थ प्रक्रिया एवं श्रौत सूत्र।**
३४.	१८ अगस्त २००२	**वेदार्थ प्रक्रिया एवं व्याकरण।**
३५.	१३ जनवरी २००३	**वेद एवं छन्द।**
३६.	८ अगस्त २००३	**वेदों में पारिवारिक जीवन।**
३७.	१३ जनवरी २००३	**वेदों में आयुर्वेद।**
३८.	२६ अगस्त २००४	**वेदों में मानसिक चिकित्सा।**
३९.	१३ जनवरी २००५	**वैदिक यज्ञ एवं मानव जीवन।**
४०.	१६ अगस्त २००५	**वेदों में अर्थवेदीय तत्त्व।**
४१.	१३ जनवरी २००६	**वेदों में विश्वशान्ति के उपाय।**
४२.	५-६ अगस्त २००६	**वेदों में योग का स्वरूप।**
४३.	१३ जनवरी २००७	**वेदों की सार्वभौमिकता।**
४४.	१३ जनवरी २००८	**वेद एवं विश्वपर्यावरण।**
४५.	१३ अगस्त २००८	**शुल्बसूत्रों में विविध ज्ञान-विज्ञान।**
४६.	१३ जनवरी २००९	**वेदों में ऊर्जा।**
४७.	१३ जनवरी २०१०	**वैदिक अग्नि का स्वरूप।**
४८.	१३ जनवरी २०११	**वैदिक वाङ्मय में प्रजापति का स्वरूप।**
४९.	९ अगस्त २०११	**गीता का वैदिकत्व एवं स्वामी समर्पणानन्द।**
५०.	१३ जनवरी २०१२	**शतपथ ब्राह्मण एवं स्वामी समर्पणानन्द।**
५१.	२९ जुलाई २०१२	**वैदिक वाङ्मय में सोमयाग का स्वरूप।**
५२.	१३ जनवरी २०१३	**वैदिक संहिताओं में सरस्वती का स्वरूप।**
५३.	१७ अगस्त २०१३	**वैदिक संहिताओं में इतिहास की परिकल्पना।**
५४.	१३ जनवरी २०१४	**वैदिक वाङ्मय में भूगोल।**
५५.	७ अगस्त २०१४	**वैदिक वाङ्मय में नैतिकतत्त्व।**
५६.	१३ जनवरी २०१५	**वैदिक वाङ्मय में देवताओं का स्वरूप।**

शोध-संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधलेख **अन्तर्राष्ट्रीय मानक (ISSN २२२९-६३२८) त्रैमासिकी शोधपत्रिका 'पावमानी'** में प्रकाशित किये जाते हैं। वेदानुरागी पाठकवृन्द अपने जिज्ञासानुसार उपर्युक्त विषयों का चयन करके भी **पावमानी** के माध्यम से वैदिक गूढ तत्त्वों का अनुशीलन कर लाभान्वित हो सकते हैं।

♦ ♦ ♦

विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में सेवारत स्नातक

१. डा. सोमदेव शतांशु – गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
२. डा. श्रीवत्स निगमालंकार – मोतीलाल नेहरु कॉलेज, दिल्ली
३. डा. वाचस्पति – मेरठ कॉलेज, मेरठ
४. डा. योगेन्द्र भानु – जया कॉलेज, भरतपुर, राजस्थान
५. डा. योगेन्द्र धामा – जी.डी. कॉलेज, अलवर, राजस्थान
६. डा. मुकेश – राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पिथौरागढ़, उत्तरांचल
७. डा. बृहस्पति – नैना देवी महाविद्यालय, विलासपुर, हिमाचलप्रदेश
८. डा. विद्यानन्द आर्य – उस्मानिया विश्वविद्यालय, भाग्यनगर, आन्ध्रप्रदेश
९. डा. दीनदयाल – गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
१०. डा. यज्ञदेव – राजकीय महाविद्यालय, नोएडा
११. डा. कर्मवीर – हिन्दू महाविद्यालय, मुरादाबाद, उ.प्र.
१२. डा. सुनील – गांधी महाविद्यालय, रमाला, बागपत, उ.प्र.
१३. डा. युद्धवीर – राजकीय पी.जी.कॉलेज, गोपेश्वर, चमौली, उत्तराखण्ड
१४. डा. भावप्रकाश – राजकीय महाविद्यालय, वेरावल, जूनागढ़, गुजरात
१५. डा. विनोद – राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कांधला, प्रबुद्ध नगर, उ.प्र.
१६. डा. वेदनिधि – विवेकानन्द महाविद्यालय, दिल्ली
१७. डा. रामरतन – उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, उत्तराखण्ड
१८. डा. जगमोहन – हिन्दू महाविद्यालय, दिल्ली
१९. डा. सत्यकेतु – लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
२०. श्री आदित्य – सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
२१. श्री भारत – महर्षि दयानन्द महाविद्यालय, महुलपाली, सुन्दरगढ़, उड़ीसा
२२. श्री निरञ्जनलाल मङ्गल – Mechanical engneering department YMCA university of science and technology, Faridabad, Harayana
२३. डा. आलोक – राजकीय महाविद्यालय, भरूच, गुजरात
२४. डा. सुखराम – शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
२५. डा. विश्वेश – राजकीय महाविद्यालय, सहारनपुर, उ.प्र.
२६. डा. रविप्रभात – राजकीय महाविद्यालय, देवबन्द, उ.प्र.
२७. श्री आनन्द – डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज, बांदा, रामदल, सं.म.वि. चांदनी
२८. डा. वेदव्रत – गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

माध्यमिक शिक्षक

१. डा. शिवशंकर – केन्द्रीय विद्यालय भिलाई, छत्तीसगढ़
२. श्री धीरेन्द्र – गंगाधर मेहर उच्चविद्यालय, उड़ीसा
३. श्री देवेन्द्र – चैतन्य पाणिग्रही उच्चविद्यालय, बथली, उड़ीसा
४. श्री प्रेमप्रकाश – केन्द्रीय विद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़
५. श्री पुरन्दर – सत्यसेवा हाईस्कूल कनसिंहा, उड़ीसा
६. श्री सन्तोष – जवाहर लाल सरकारी हाई स्कूल, बलांगीर, उड़ीसा
७. श्री हिमांशु – राजकीय विद्यालय, उड़ीसा
८. श्री कृष्णदेव – डी.ए.वी. कॉलेज, धनवाद, झारखण्ड
९. श्री विद्यासागर – सुनादेई हाईस्कूल, बिशिवहाल, बरगढ़, उड़ीसा
१०. श्री भारतीनन्दन (**संस्कृतकाव्य के प्रणेता**) – बुद्धदेव उच्च विद्यालय, गनियापाली, उड़ीसा
११. श्री नरेन्द्र (**संस्कृतकाव्य के प्रणेता**)– सरस्वती विद्या मन्दिर, नालको अनुगुल, उड़ीसा
१२. श्री संजीव – डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, भिलाई, छत्तीसगढ़
१३. श्री बलदेव – राजकीय उच्च विद्यालय, बड़ौली, फरीदाबाद
१४. श्री शिवकुमार – इन्टर कालिज सरूरपुर, मेरठ
१५. डा. यशपाल – प्रधानाचार्य, किसान इण्टर कॉलेज, मढी, मेरठ
१६. श्री सत्यवीर – सर्वोदय विद्यालय, दिल्ली
१७. श्री भूपेन्द्र – सर्वोदय विद्यालय, दिल्ली
१८. श्री धर्मेन्द्र – जनता इण्टर कॉलेज, रवापुरी, खतौली, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.
१९. श्री नवनीत – केन्द्रीय विद्यालय, बरेली
२०. डा. अजय – केन्द्रीय विद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़
२१. श्री उत्तम – राजकीय सर्वोदय विद्यालय, अशोक विहार, दिल्ली
२२. श्री अनुज – राजकीय सर्वोदय विद्यालय, प्रतापनगर, दिल्ली
२३. श्री सुशील – राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, कल्याणपुरी, दिल्ली
२४. श्री कौस्तुभ – डी.पी.एस., रायपुर, छत्तीसगढ़
२५. श्री शिवराज – वासुदेव उच्च महाविद्यालय, उमाबहाल, सुन्दरगढ़, उड़ीसा
२६. श्री सत्यकेतु – एकलब्य सेवाश्रम महाविद्यालय, सिलेमुड़ा, रायगढ़, उड़ीसा
२७. श्री राजेश – गवर्मेन्ट ब्वॉयज सीनियर सेकेन्डरी स्कूल, मॉडल टाऊन, दिल्ली
२८. श्री भुवनेश – पी.जी.टी., भिवानी, हरियाणा

विभिन्न संस्थानों में सेवारत स्नातक

१. श्री सत्यदेव – महावीर सीनियर मॉडल स्कूल, राणाप्रताप बाग, दिल्ली
२. श्री वेदप्रकाश – डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद
३. श्री राजकुमार – आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, जी.टी. रोड़, पानीपत
४. श्री कुलदीप – डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, वसन्त कुञ्ज, दिल्ली
५. श्री प्रदीप – आर्मी स्कूल, मेरठ
६. श्री धर्मराज – डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, जामादोवा, धनवाद, झारखंड
७. श्री श्यामप्रसाद – आर्मी स्कूल, सिकन्दराबाद
एवं प्रबन्धक- पाणिनि प्रभात कन्या महाविद्यालय, हैदराबाद
८. श्री अनूपचन्द्र – अध्यापक, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, दिल्ली
९. श्री धनञ्जय – घनामाल पंचायत महाविद्यालय, बरगढ़, ओड़ीशा
१०. श्री मृणाल – वंशीधर पारशनाथ डी.ए.वी. स्कूल, गंड़वा, झारखंड
११. श्री मोतीचन्द्र – पूर्व माध्यमिक विद्यालय, गुलावटी
१२. श्री समरेन्द्र – संस्कृत महाविद्यालय, चादंनी चौक, दिल्ली
१३. श्री आशीष – अध्यापक, प्राथमिक विद्यालय, पंथरी
१४. श्री प्रदीप – अध्यापक, दिल्ली पब्लिक स्कूल, दिल्ली
१५. श्री बलराम – डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, हेमपुर, चंदुआ, लातहोर, झारखंड
१६. श्री दिवेश – अध्यापक, खिनीपर सै.स्कूल, हर्ष विहार, दिल्ली
१७. श्री सत्यव्रत – रईफल इन्दरनेशनल स्कूल, बईटोड़, राजस्थान
१८. श्री ब्रह्मदत्त – श्री दादू बलराम सं.म.वि., बागपत, उ.प्र.
१९. श्री विज्ञानानन्द – संयुक्त महामन्त्री, विश्व हिन्दू परिषद्
२०. श्री सुमेरुप्रसाद – आचार्य, दर्शनयोग महाविद्यालय, साबरकांठा, गुजरात
२१. श्री देवदत्त – एम.जी. कॉन्वेन्ट स्कूल, शाहजहाँपुर, उ.प्र.
२२. श्री अशोक – अधिवक्ता, मेरठ कचहरी, मेरठ
२३. श्री सत्यदेव – सह प्रबन्धक, यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, इटावा, उ.प्र.

कनिष्ठ छात्रवृत्ति परीक्षा (जे.आर.एफ.) एवं अर्हता परीक्षा (नेट)

१. डा. सोमदेव शतांशु
२. डा. शिवशंकर
३. डा. श्रीवत्स निगमालंकार
४. डा. वाचस्पति
५. डा. योगेन्द्र भानु
६. डा. योगेन्द्र धामा

७. डा. मुकेश
८. डा. बृहस्पति
९. डा. कर्मवीर
१०. डा. युद्धवीर
११. डा. विनोद
१२. डा. वेदनिधि
१३. डा. सत्यकेतु
१४. डा. सञ्जय
१५. डा. विद्यानन्द
१६. डा. यज्ञदेव
१७. श्री सुधीर
१८. श्री सुनील
१९. डा. रामरतन
२०. डा. जगमोहन
२१. श्री धर्मेन्द्र
२२. डा. भावप्रकाश
२३. डा. वरुण
२४. श्री वेदवर्धन
२५. डा. रविप्रभात
२६. डा. सुखराम
२७. डा. वेदव्रत
२८. डा. विश्वेश
२९. श्री आनन्द
३०. श्री यशस्वी
३१. श्री आलोक
३२. श्री उत्तम
३३. डा. अजय
३४. श्री यशस्वी
३५. श्री भोजराज
३६. श्री वेदांशु
३७. श्री विपिन
३८. श्री प्रशान्त
३९. श्री रोहित
४०. श्री कुलदीप
४१. श्री प्रमोद
४२. श्री सतीश

स्नातकोत्तर परीक्षाओं में स्वर्णपदक प्राप्त

१. डा. श्रीवत्स निगमालंकार – एम.ए. स्वर्णपदक, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
२. डा. वाचस्पति – एम.ए. स्वर्णपदक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
३. डा. सञ्जय – एम.ए. स्वर्णपदक, मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ, उ.प्र.
४. डा. विद्यानन्द – एम.ए. (८८% कीर्तिमान स्थापित) स्वर्णपदक, उस्मानिया वि.वि.
५. डा. दीनदयाल – वेदालंकार स्वर्णपदक, एम.ए. स्वर्णपदक, गु. का. वि.वि., हरिद्वार
६. डा. कर्मवीर – एम.ए. स्वर्णपदक, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
७. डा. युद्धवीर – एम.ए. स्वर्णपदक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
८. डा. भावप्रकाश – एम.ए. स्वर्णपदक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
९. डा. रामरतन – एम.ए. स्वर्णपदक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

१०. डा. सत्यकेतु – शिक्षाशास्त्री, स्वर्णपदक, लालबहादुरशास्त्री संस्कृतविद्यापीठ, दिल्ली
११. डा. रविप्रभात – एम.ए. स्वर्णपदक, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
१२. श्री यशस्वी – एम.ए. स्वर्णपदक, तिरुपति विश्वविद्यालय, आन्ध्रप्रदेश
१३. श्री प्रमोद – एम.ए. स्वर्णपदक, सुखाड़िया विश्वविद्यालय, राजस्थान
१४. श्री सतीश – एम.ए. स्वर्णपदक, उस्मानिया विश्वविद्यालय, आन्ध्रप्रदेश
१५. श्री विपिन – शिक्षाशास्त्री, स्वर्णपदक, लालबहादुरशास्त्री संस्कृतविद्यापीठ, दिल्ली

विभिन्न विश्वविद्यालयों से सम्मानित शोधच्छात्र (पी.एच.डी.)

१. डा. सोमदेव शतांशु – चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
२. डा. श्रीवत्स निगमालंकार – दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
३. डा. वाचस्पति – दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
४. डा. योगेन्द्र भानु – दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
५. डा. योगेन्द्र धामा – महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
६. डा. मुकेश – चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
७. डा. बृहस्पति – गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
८. डा. यशपाल – चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
९. डा. विद्यानन्द आर्य – उस्मानिया विश्वविद्यालय, आन्ध्रप्रदेश
१०. डा. दीनदयाल – गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
११. डा. यज्ञदेव – दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
१२. डा. कर्मवीर – दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
१३. डा. सुनील – पञ्जाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
१४. डा. युद्धवीर – दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
१५. डा. शिवशंकर – राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, दिल्ली
१६. डा. मिथिलेश – गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
१७. डा. भावप्रकाश – गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
१८. डा. रामरतन – गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
१९. डा. करुण – गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
२०. डा. विनोद – दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली,
२१. डा. सञ्जय – McGill University, Canada
२२. डा. वेदनिधि – दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

२३. डा. रविप्रभात – दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
२४. डा. वेदव्रत – गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
२५. डा. जगमोहन – दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
२६. डा. सत्यकेतु – दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
२७. डा. वरुण – राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
२८. डा. सुखराम – दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
२९. डा. विश्वेश – जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, दिल्ली
३०. डा. उत्तम – चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

विभिन्न विश्वविद्यालयों में शोधरत छात्र

१. श्री यशस्वी – तिरुपति विश्वविद्यालय, आन्ध्रप्रदेश
२. श्री आनन्द – दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
३. श्री आलोक – सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, गुजरात
४. श्री वेदवर्धन – दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
५. श्री प्रमोद – राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
६. श्री सतीश – दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
७. श्री भोजराज – दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
८. श्री वेदांशु – जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली
९. श्री विपिन – दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
१०. श्री प्रशान्त – दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
११. श्री रोहित – दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
१२. श्री कुलदीप – दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

धर्माचार्य

१. श्री विनोद – आर्यसमाज, गोशाला संचालन कार्य, शास्त्रीनगर, मेरठ
२. श्री दयाशंकर – आर्यसमाज, शास्त्री नगर, मेरठ
३. श्री राजेन्द्र – आर्यसमाज, बुढ़ाना गेट, मेरठ
४. श्री गोपाल – स्वतन्त्ररूप से वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में कार्यरत
५. श्री मिथिलेश – आर्यसमाज, गोरेगाँव, मुम्बई
६. श्री शत्रुञ्जय – आर्यसमाज, चण्डीगढ़
७. श्री प्रवीण – योगाचार्य, मुम्बई
८. श्री इन्द्रमणि – पूर्वोत्तर राज्यों में शुद्धि आन्दोलन के कार्य में संलग्न एवं गोमाता की रक्षा हेतु गोशाला का संचालन, बरगढ़, ओड़ीशा

९. श्री यमाचार्य – त्र्यम्बक आश्रम, विनौली, जीन्द, हरियाणा
१०. श्री सुरेश्वरानन्द – अध्यक्ष, अखिल ब्रह्माण्ड सेवा समिति
११. श्री सुजीत – वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में संलग्न, सिंगापुर
१२. श्री विश्वजित् – आर्यसमाज, सरिता विहार
१३. श्री वागीश्वर – आर्यसमाज, थापरनगर, मेरठ
१४. श्री प्रेमराज – आर्यसमाज, सदर, मेरठ
१५. श्री कुलदीप – आर्यसमाज, सब्दरजंग एन्क्लेब, दिल्ली

आर्ष संस्थाओं के आचार्य एवं उपाचार्य

१. श्री जयेन्द्र – आचार्य, आर्षगुरुकुल, सैक्टर-३३, नोएडा
२. श्री जयकुमार – आचार्य, गुरुकुल मंझावली, फरीदाबाद, हरियाणा
३. श्री त्रिनाथ – अधिष्ठाता एवं उपाचार्य, गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ
४. श्री योगेन्द्र – प्रधानाचार्य, महर्षि दयानन्द विद्या आश्रम, कंचनपुर, मथुरा
५. श्री ज्ञानेन्द्र – उपाचार्य, महर्षि दयानन्द विद्या आश्रम, कंचनपुर, मथुरा
६. श्री अनन्त – आचार्य, महर्षि दयानन्द कन्या गुरुकुल, बरगढ़, ओड़ीशा

विभिन्न संस्थाओं में पदाधिकारी खिलाड़ी

१. श्री वेदकुमार – इंस्पेक्टर, आई.टी.बी.पी
२. श्री सत्यदेव – प्रशिक्षक, साइ, कलकत्ता
३. श्री विश्वास – सुबेदार, भारतीय सेना
४. श्री प्रभात – नायब सुबेदार, भारतीय सेना
५. श्री कैलाश – सब्इंस्पेक्टर, सी.आर.पी.एफ.
६. श्री पुनीत – सिपाही, सी.आर.पी.एफ.
७. श्री प्रियंक – इंस्पेक्टर, आई.टी.बी.पी.
८. श्री मनोज – सब्इंस्पेक्टर, बी.एस.एफ.
९. श्री कपिल – क्लर्क, भारतीय रेलवे
१०. श्री विकास – प्रशिक्षक, साइ, पटियाला

११. श्री अभयदेव – सिपाही, एस.एस.बी.
१२. श्री उमेश – हवलदार, भारतीय सेना
१३. श्री आनन्द – हवलदार, भारतीय सेना
१४. श्री चरण – सिपाही, बी.एस.एफ
१५. श्री वैद्यनाथ – सिपाही, आई.टी.बी.पी.
१६. श्री राजमणि – प्रशिक्षक, साइ, कलकत्ता
१७. श्री राजीव – सिपाही, बी.एस.एफ.
१६. श्री जयवीर – मल्लयुद्ध प्रशिक्षक, अखाड़ा किशन गंज, दिल्ली

♦ ♦ ♦

आश्रम में मनाये जाने वाले उत्सव एवं कार्यक्रम

आश्रम में समय-समय पर उत्सव एवं विभिन्न उत्सवधर्मी कार्यक्रमों का आयोजन होता रहता है। जिनमें मुख्य रूप से

१.	वैदिक शोध संगोष्ठी –	**१३ जनवरी**
२.	मकर सौर संक्रान्ति के पावन पर्व पर गुरुकुल का वार्षिकोत्सव –	**१४ जनवरी**
३.	नवसंवत्सर के उपलक्ष्य में जनचेतना महायज्ञ –	**चैत्र शुक्ल प्रतिपदा**
४.	गंगा दशहरा –	**ज्येष्ठ शुक्ल दशमी**
५.	गुरुपूर्णिमा –	**आषाढ़ पूर्णिमा**
६.	संस्कृतदिवस –	**श्रावणी पूर्णिमा**
७.	गीताजयन्ती –	**मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी**

आदि मनाये जाते हैं।

वहीं राष्ट्रभक्त महापुरुषों के जन्मदिवस व पुण्यतिथि तथा भारतीय मुख्य पर्वों के उपलक्ष्य में सभाओं का भी आयोजन किया जाता है। जहां श्रीरामनवमी, श्रीकृष्णजन्माष्टमी, बुद्धपूर्णिमा, दयानन्द बोधदिवस, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, पं लेखराम जयन्ती, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, वीर सावरकर, चन्द्रशेखर आजाद, सरदार भगत सिंह, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, सरदार बल्लभ भाई पटेल, गुरुनानक जयन्ती, विजयादशमी, दीपमालिका, होलिका आदि विषयों पर गुरुकुलीय छात्रों व सदस्यों को सम्बोधित कर उन्हें ऐतिह्य वृत्तान्तों से अवगत कराया जाता है।

आतिथ्य-व्यवस्था

आश्रम भूमि पर पधारने वाले आगन्तुक अतिथि महानुभावों के आतिथ्य की सुन्दर व्यवस्था है, जहां उनके आवास-निवास हेतु भव्य अतिथिशाला का निर्माण किया गया है। आश्रमीय परम्परानुसार आश्रम में पधारे हुए सज्जन महानुभावों के लिए कुछ निम्नलिखित नियम हैं -

१. शास्त्रीय नियमानुसार यहां पर अभ्यागतवृन्दों का आतिथ्य तीन समय तक होता है।
२. स्वप्रयुक्त पात्र-वस्त्रादि स्वयं स्वच्छ करें।
३. अभिभावक तथा अतिथि महानुभाव आचार्य की अनुमति बिना छात्रों से मिल बातें न करें तथा इधर-उधर व्यर्थ न घूमें।
४. पूज्य श्री स्वामी जी महाराज के दर्शन का समय दिन २ बजे के पश्चात् ही है। दर्शन से पूर्व आचार्य की अनुमति अवश्य लें।
५. अनुमति के बिना आश्रमीय किसी वस्तु का प्रयोग व फल-फूल तोड़ना मना है।
६. आश्रम भूमि में चाय, धूम्रपानादि मादक द्रव्यों को प्रयोग करना सर्वथा वर्जित है।
७. सभी अतिथियों को प्रातः एवं सायंकालीन सन्ध्या, यज्ञादि में सम्मिलित होना अनिवार्य है।

समर्पण शोध संस्थान के कुछ मुख्य प्रकाशन

१.	शतपथब्राह्मण-भाष्य (प्रथमकाण्ड)	- स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती
२.	शतपथ में एक पथ	- स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती
३.	सप्तसिन्धु सूक्त	- स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती
४.	सोम एवं मरुत्सूक्त	- स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती
५.	श्रीमद्भगवद्गीता (सामर्पण गीताभाष्य)	- स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती
६.	वेदों के सम्बन्ध में क्या जानो और क्या भूलो	- स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती
७.	भक्तिलहरी (पुस्तक/सी.डी.)	- स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती
८..	कायाकल्प	- स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती
९.	उसकी राह पर	- स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती
१०.	विवेक सन्दोह	- स्वामी विवेकानन्द सरस्वती
११.	विवेक निष्कर्ष निकष	- स्वामी विवेकानन्द सरस्वती
१२.	काव्यसन्दोह	- स्वामी विवेकानन्द सरस्वती
१३.	वेद एवं वेदार्थ	- स्वामी विवेकानन्द सरस्वती
१४.	अग्निहोत्र यज्ञ विज्ञान की दृष्टि में	- स्वामी विवेकानन्द सरस्वती
१५.	वैदिक चिन्तन	- स्वामी विवेकानन्द सरस्वती
१६.	वैदिक शासन व्यवस्था	- पावमानी का विशेषांक
१७.	वैदिक शोध रत्नावली	- पावमानी का विशेषांक
१८.	वैदिक आलोक	- पावमानी का विशेषांक
१९.	समर्पण शती सौरभम्	- डा. निरूपण विद्यालंकार
२०.	प्रभात कौटुम्बिकी	- पावमानी का विशेषांक
२१.	स्वामी समर्पणानन्द एवं गीता का वैदिकत्व	- पावमानी का विशेषांक
२२.	हिन्दू	- स्वामी विज्ञानानन्द
२३.	संस्कृत सम्भाषण शिक्षक	- डा. श्रीवत्स शास्त्री

♦ ♦ ♦

आश्रम की दिनचर्या

आश्रम के छात्रों की दिनचर्या पूर्ण व्यवस्थित एवं संयत है।
आश्रम की दिनचर्या इस प्रकार है :-

४.००	–		प्रातः जागरण (जागरण के पश्चात् वेद-मन्त्रों से प्रातःकालीन ईश्वर-प्रार्थना)
४.००	–	४.४५	शौच-दन्तधावनादि
४.४५	–	५.३०	प्राणायाम, व्यायाम, योगासन एवं दौड़
५.३०	–	६.००	स्नान
६.००	–	७.००	सन्ध्या, यज्ञ, गीतापाठ एवं वेदपाठ
७.००	–	८.००	प्रकोष्ठ-स्वच्छता एवं प्रातराश
८.००	–	११.३०	अध्ययन-अध्यापन
११.३०	–	१.३०	भोजन एवं मध्यावकाश
१.३०	–	३.३०	अध्ययन-अध्यापन
३.३०	–	४.००	सामूहिक ध्यान
४.००	–	४.२०	शौचादि के लिये अवकाश
४.२०	–	४.३०	जलपान
४.३०	–	५.३०	कार्य (श्रमदान)
५.३०	–	६.३०	व्यायाम क्रीडादि
६.३०	–	६.५०	स्नान
६.५०	–	७.३०	हवन, सन्ध्या आदि
७.३०	–	८.३०	भोजन एवं भ्रमण
८.३०	–	९.३०	स्वाध्याय
९.३०			शयनकालीन मन्त्रोच्चारण प्रार्थना तत्पश्चात् शयन

विशेष : ऋतु अनुकूल कार्यक्रम में परिवर्तन भी होते हैं।

♦ ♦ ♦

गोस्तु मात्रा न विद्यते (यजुर्वेद- २३/४८)

पञ्चगव्य से निर्मित आश्रम की 'सुधा' औषधियाँ

वेदानुमोदित अपार एवं अनन्त गुणों की निधि, पवित्र, अमृतमयी गोमाता के पञ्चगव्य (गोमूत्र, गोमय, गोदुग्ध, गोघृत एवं गोदधि) से निर्मित **'पञ्चगव्य महाशक्ति'** के रूप में आश्रम में अनेक **'सुधा'** औषधियों का निर्माण आपके सुस्वास्थ्य हेतु किया जाता है -

१. **प्रभात सुधा 'चाय'** - ज्वर, जुकाम आदि शीत-सम्बन्धी रोगों में पूर्ण लाभकारी।
२. **नेत्र सुधा** - मोतियाबिन्द, धुंधलापन, लाली, नखुना जैसे नेत्र-सम्बन्धी विकारों में रामबाण।
३. **गन्ध सुधा** - सुस्वास्थ्य के साथ मनोहारिणी गृहसुगन्धि के लिए।
४. **दन्त सुधा** - दाँत एवं मसूड़ा सम्बन्धी रोगों में पूर्ण प्रभावकारी।
५. **केश सुधा** - बाल झड़ना, बाल पकना आदि केशविकारों में लाभकारी शैम्पू।
६. **सौन्दर्य सुधा** - सुगन्ध के साथ ताजगी, त्वचारोगनाशक एवं प्रसन्नताप्रद साबुन।
७. **मेदोहर अर्क सुधा** - मोटापा, यकृत् रोग, त्वचारोग आदि रोगों में लाभकारी।
८. **गोमूत्र अर्क सुधा** - मूत्र सम्बन्धी विकार एवं पीलिया आदि रोगों में लाभकारी।
९. **चर्म सुधा** - त्वचा सम्बन्धी रोगों में लाभकारी।
१०. **नारी शक्ति सुधा** - महिलाओं के आन्तरिक समस्त रोगों में पूर्ण लाभप्रद।
११. **केश सुधा 'तेल'** - असमय बाल झड़ना व सफेद होना, रूसी आदि केशविकारों लाभकारी तथा अनिद्रा रोग को दूर कर पूर्ण निद्रा में सहायक।
१२. **पौरुष शक्ति सुधा** - पुरुषों के धातुविकार, स्वप्नदोष आदि क्षय रोगा को दूर कर बल-वीर्य की वृद्धि में अत्यन्त लाभदायक।
१३. **घर्षण सुधा** - शरीर की ग्रन्थियों की पीड़ा व सूजन, नसों की दुर्बलता आदि अस्थि सम्बन्धी विकारों में सुखकारी तथा शरीर की मालिश हेतु।
१४. **मस्तिष्करोगनाशिनी सुधा** - मस्तिष्क-सम्बन्धी सभी रोगों एवं सूक्ष्म कोशिकाओं में लाभप्रद।
१५. **सर्पगन्धार्क सुधा** - कैंसर व रक्तचाप नियन्त्रण में लाभकारी।
१६. **हृद्रोगनाशनी सुधा** - हृदयसम्बन्धी रोगों का नाश रक्त को प्राकृतिक स्थिति प्रदान करती है।
१७. **मधुमेहनाशनी सुधा** - शुगर का नाश कर शरीर को बलप्रदायक।
१८. **रोगहन्त्री सुधाा** - अनुपान-भेद के साथ अनेक रोगों में लाभकारी।
१९. **कर्णरोगनाशनी सुधाा** - कान के सभी रोगों में लाभकारी।
२०. **वातनाशनी सुधा** - सभी प्रकार के वात-रोगों में लाभकारी।

इत्यादि अन्य भी अनेक 'सुधा' औषधियाँ आपके सुस्वास्थ्य के लिए उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी के लिए हमारे गव्यसिद्ध डा. ज्ञानेन्द्र जी से सम्पर्क करें - दूर. : ९३५८३५०६४५, ९३५९३४७७५२

♦ ♦ ♦

पाठ्यक्रम

ऋषि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट आर्ष पाठविधि के अनुसार सम्पूर्ण वर्ष यहाँ पर अध्ययन-अध्यापन का कार्यक्रम चलता है, जहाँ वर्णोच्चारण शिक्षा से आरम्भ कर पातञ्जल महाभाष्य पर्यन्त व्याकरणशास्त्र का तथा वेद, वेदाङ्ग, दर्शन, उपनिषद्, गीता, रामायण, महाभारत आदि ऋषिप्रणीत शास्त्रों का पूर्ण अध्ययन-अध्यापन प्राचीन गुरुकुल शिक्षापद्धति के वातावरण में देववाणी संस्कृत भाषा के माध्यम से कराया जाता है। साथ ही आधुनिकता से समन्वय हेतु अंग्रेजी एवं संगणक (कम्प्यूटर) का भी प्रशिक्षण छात्रों को दिया जाता है।

कक्षा-शिक्षण-कार्य

शिक्षा-अवधि - कक्षा ६ से आरम्भ कर शास्त्री कक्षा पर्यन्त।

महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय की परीक्षाएँ

पूर्व मध्यमा, उत्तर मध्यमा - उत्तरप्रदेश माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद्, लखनऊ
शास्त्री कक्षा - सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

अवकाश

भारतीय तिथि अनुसार **अष्टमी, अमावस्या एवं पूर्णिमा** के दिन साप्ताहिक अवकाश होता है।

व्यावहारिकी भाषा

गुरुकुलीय दिनचर्या में छात्रों के परस्पर व्यवहार की भाषा **देवभाषा संस्कृत** है।

♦ ♦ ♦

प्रवेश-नियम

१. नूतन सत्र में छात्रों के प्रवेश के लिये २६ जून से ३० जून तक का समय निर्धारित रहता है।
२. पञ्चम श्रेणी-उत्तीर्ण छात्रों को ही आश्रम में प्रवेश मिलता है।
३. बिना किसी भेदभाव के सभी वर्ग के छात्र अध्ययन कर सकते हैं। किन्तु प्रवेश से पूर्व सभी छात्रों की परीक्षा ली जाती है, जो लिखित एवं मौखिक दो चरणों में सम्पन्न होती है। लिखित परीक्षा में ६०% प्राप्तांक छात्र ही मौखिक परीक्षा का अधिकारी होता है। प्रवेश परीक्षा शुल्क रु. ३५० होगा। (**परीक्षा विषय** - प्रवेशार्थी ने विगत वर्षों में जो कुछ पढ़ा है तथा बुद्धि परीक्षण के लिये सामान्य ज्ञान की बातें।)
४. प्रवेशार्थी छात्र की आयु ९-१० वर्ष की ही होनी चाहिए।
५. प्रवेशार्थी छात्र का स्वस्थ, निरोग, सुशील, चरित्रवान् एवं आज्ञाकारी होना आवश्यक है। छात्र के इसके विपरीत प्रमाणित होने पर प्रवेशोपरान्त भी उसे आश्रम से बहिष्कृत किया जा सकता है।
६. प्रवेश के समय प्रवेशशुल्क ३००० रुपये एवं प्रारम्भिक आवश्यक वस्तुओं के लिये ५०० रुपये। इस प्रकार ३५०० रुपये अधिकोषित कराने पड़ते हैं।
७. आश्रम का गणवेश पीत (वसन्ती) रंग का कुर्त्ता एवं कटिवस्त्र है तथा ऊर्णावस्त्र (गरम कपड़े) आदि भी इसी रंग के होते हैं।
८. प्रवेश के समय छात्र के पास ऋतु अनुकूल बिस्तर, दो जोड़ी कुर्ता-कटिवस्त्र (पीले रंग का), थाली, कमण्डलु, चषक (ग्लास), चम्मच, कटोरी, अभ्यास-पुस्तिका, लेखनी, मच्छरदानी, कक्षा छः की पुस्तकें - उत्तर प्रदेश शिक्षा परिषद्, एवं एक मञ्जुषा (बक्सा) होना चाहिये।
९. जब तक छात्र पूर्ण विद्याध्ययन नहीं कर लेता, तब तक उसे घर के लिये किसी प्रकार का अवकाश नहीं प्राप्त हो सकता तथा जब तक विद्यार्थी पूर्ण अध्ययन नहीं कर लेता, तब तक उसे अभिभावक यहाँ से ले जा भी नहीं सकते। यदि किसी परिस्थितिवश ले जाना चाहते हैं तो आश्रम में निवासावधि पर्यन्त रु. ३००० मासिक आश्रम को देना होगा।
१०. अभिभावक आचार्य की अनुमति से वर्ष में २ बार मिल सकते हैं। विशेष परिस्थिति में आचार्य की विचारणा प्रमाणित होगी।
११. किसी असाध्य संक्रामक रोग की अवस्था में छात्र को शिक्षा के बीच में ही विद्यालय से मुक्त किया जा सकता है।
१२. अभिभावक पृथक् रूप से किसी बच्चे के लिये कोई वस्तु आचार्य की अनुमति के बिना नहीं देंगे। तथा पत्रव्यवहार एवं दूरभाष आदि भी आचार्य के माध्यम से करेंगे।
१३. छात्र के अनुशासन भंग करने पर या चारित्रिक दोष-युक्त होने पर आश्रम से उसका बहिष्कार किया जा सकता है।

विशेष - किसी भी योग्य छात्र का प्रवेश आचार्य जी के विवेकाधीन होगा।

♦ ♦ ♦